ए माया आद अनादकी

ए माया आद अनादकी, चली जात अंधेर।
निरगुन सरगुन होए के व्यापक, आए फिरत है फेर।।

संसे मिटाया सतगुरें, साहेब दिया बताए।
सो नेहेचल वतन सरूप, या मुख बरन्यो न जाए।।

हबीब बताया हादिएँ, मेरा ही मुझ पास।
कर कुरबांनी अपनी, जाहेर करूं विलास।।

तुम देखत मोहे इन इंड में, मैं चौदे तबक से दूर।
अंतरगत ब्रह्मांड तें, सदा साहेब के हजूर।।

ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्म की, है सुध कतेब वेद।
सो आप आखिर आए के, अपनो जाहेर कियो सब भेद।।

महामत जो रूहें ब्रह्म सृष्ट की, सो सब साहेब के तन।